Date / /
Page No. 1
Shivalal

समाजशास्त्र का उद्‌भव तथा उत्पत्ति

समाजशास्त्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में अगस्त कॉम्टे ने किया। उन्होंने ये विचारधारा सन् 1824 में सेंट साइमन से ली। इसी को आधार मानकर उन्होंने समाजशास्त्र को सर्वप्रथम सॉशल नाम दिया। कुछ विचारकों ने इस आपत्ति जनक टिप्पणी physics की। उसके फलस्वरूप सन् 1838 में अगस्त कॉम्टे ने समाजशास्त्र की सॉशलॉजी शब्द से सम्बोधित किया। कि मॉरिस गिन्सबर्ग ने लिखा है। कि मोटे तौर पर कहा जासकता है। समाजशास्त्र का उद्‌भव या उत्पत्ति राजनितिक वृत्ति, इतिहास विकास के पृष्ठशास्त्री सिद्धांत तथा सुधार के लिए होने वाले उन सभी सामाजिक व राजनैतिक जिन्होंने सामाजिक दशाओं का सर्वेक्षण करना आवश्यक समझा।

एक लम्बे अंतराल के बाद 15-वीं शताब्दी से कुछ ऐसी घटना घटित हुई। जिनके प्रभाव से पश्चिमी समाज के राजनितिक आर्थिक सामाजिक दशाओं में तेजी से परिवर्तन आना शुरु हो गया। उन घटनाओं में तीन घटनाऐं महत्वपूर्ण हैं।

(1) पुनर्जागरण (2) फ्रांस की क्रांति (3) इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति

पुनर्जागरण :- पुनर्जागरण का अर्थ है। अपने अधिकार के लिए पुनः जागना युरोप में पुनर्जागरण 15वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ। युरोप में राजनितिक अस्थिरता और जनसाधारण शोषण में बहुत वृद्धि होने लगी युरोप के बहुत से विद्वान जाकर रहने लगे युनानी लेटिन फ्रेंच साहित्य कार एक बड़ा हिस्सा इटली पहुंच गया फलस्वरूप धर्म दर्शन सामाजिक संरचना तथा व्यक्ति के अधिकारों पर नये दृष्टिकोण से प्रारम्भ होने लगा नये चिन्तन के प्रभाव से जर्मनी के अनेक लेखकों से पादरीयों द्वारा किये जाने वाले शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना शुरु कर दी।

मार्टिन लूथर — द्वारा लिखी गई पुस्तक न्यु तेस्तामेन्त से

से लोगों को वास्तविक उपदेशों को जिससे धीरे-2 पूरे यूरोप में परम्परागत विश्वासों की जगह तार्के और मानवतावादी विचारों को प्रोत्साहन मिलने लगा इस समय थॉमस हॉब्स जॉन लॉक ह्यूम तथा काट जैसे विद्वानों ने सामाजिक सम्बन्धों तथा घटनाओं से सम्बन्धित विवेचना की वैज्ञानिक नियमों के आधार पर करना शुरू कर दिया। पुनर्जागरण काल समाज को नये दृष्टि समझने आधार से तैयार होने लगा।

फ्रांस की क्रांति :- यह वह दूसरी प्रारंभिक घटना थी। जिसके फलस्वरूप फ्रांस के साथ जर्मनी स्पेन डेनमार्क और स्वीडन में लोगों ने अपने समाज तथा धर्म पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करना शुरू कर दिया। सन् 1789 फ्रांस की क्रांति से पहले फ्रांस का शासन पूरी तरह सम्राट बड़े-2 सामन्तो पर और अधिकार सम्बन्ध लोगों पर निर्भयता समाज के मध्यम व निम्न वर्ग को किसी तरह के अधिकार नही थे। पुनर्जागरण के प्रभाव से फ्रांस की जनता में जब चेतना पैदा हुई उसने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का विरोध करना शुरू कर दिया।

पहले इस आवाज को कई बार दबाया गया। लेकिन नेपोलियन ने अपने शासनकाल में देश की निति के निर्माण में जन साधारण स्वीकार कर लिया। तथा वहां निरंकुश राजतंत्र की समाप्ति हो गई। जिससे व्यक्ति स्वतंत्र सामाजिक समानता और राष्ट्रवादी विचारो को मत मिलने लगा।

इंग्लैंड की क्रांति

इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति का समय 1768 से 1830 का माना जाता है। यह वह समय था। जब इंग्लैंड में तेजी से विकास होने के कारण औद्योगिक उत्पादन आवागमन के साधनों का तेजी से विकास हुआ। जिससे पतन से बेरोजगारी भी हुआ। इसरी तरफ कारखानों श्रमिकों का असंतोष बढ़ा। इस के फलस्वरूप मजदूरों ने अपने अधिकार के लिए क्रांति करना शुरू कर दिया।

समाजशास्त्र का अर्थ —
सोशलोजी शब्द का अर्थ शाब्दिक रूप से शाशलॉजी सॉशियस जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई। लोगस जो ग्रीक भाषा से लिया गया है। सॉशियस का अर्थ समाज से है तथा लोगस का अर्थ है। शास्त्र या विज्ञान।

समाजशास्त्र को अध्ययन की सरलता के लिए समाजशास्त्र चार भागों में विभाजित किया गया है। समाजशास्त्र दुर्खिम, गिडिंग्स समनर, वार्ड्स, ओगबर्न, मिचेल आदि समाजशास्त्री सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। मैकाइवर निकबर समाजशास्त्र सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

समाजशास्त्र के प्रख्यात समाजशास्त्री हेनरी जॉनस हैं।

समाजशास्त्र की परिभाषाएँ —:

1- मैकाइवर पेज के अनुसार- समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन है। समाजशास्त्र समग्र रूप में समाज का व्यवस्थित वर्णन व व्याख्या करता है।

2- दुर्खिम के अनुसार — समाज शास्त्र सामूहिक प्रतिनिधानों का विज्ञान है।
3- डा० राधा कमल मुखर्जी- समाजशास्त्र सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करता है।
4- गिलिन और गिलिन के — व्यक्ति के एक दूसरे की सम्पर्क में होने वाली उत्पन्न होने वाली अतः क्रियाओं को समाजशास्त्र कहते हैं।
5- गिन्सबर्ग — समाजशास्त्र मानवीय अतः क्रियाओं का स्वरूपों का अध्ययन है तथा अंतिम संबंधों तथा उनके कारणों का अध्ययन करता है।
6- हाब हाउस — समाजशास्त्र की विषय वस्तु मानव मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली अतः क्रियाएँ है।
7- सिमैल — समाजशास्त्र मानवीय अतः क्रियाओं का स्वरूपों का अध्ययन है।
8- मैक्स वेबर समाज शास्त्र वह विज्ञान है। जो सामाजिक क्रियाओं का व्याख्यात्मक क्रियाओं का बोध कराता है।
वर्स्टहीन पद्धति → यह जर्मन भाषा का शब्द है।

9- टॉल्कॉट पारसन्स इनका विचार है कि सम्पूर्ण सामाजिक सम्बन्धो समाज और सामाजिक व्यवस्था को क्रिया धारणा धारणा जा सकता है।

10- जॉनसन समाजशास्त्र सामाजिक समुहों का विज्ञान है। या सामाजिक समूहों की अन्त: क्रियाओं की व्यवस्था है।

समाजशास्त्र के क्षेत्र

यह दो प्रकार हैं। (1) स्वरूपात्मक संप्रदाय (2) समन्वयात्मक सम्प्रदाय

- स्वरूपात्मक - स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के समर्थकों का मत है कि सामाजिक सम्बन्धो का क्षेत्र इतना व्यापक है कि समाजशास्त्र में सभी प्रकार के सम्बन्धों का अध्यन इसे विज्ञान नही मनाया जा सकता है। अतः समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है। जिनका विषय क्षेत्र सीमित होना चाहिए इस सम्प्रदाय के जार्ज सिमेल, मैक्सवेबर, दीवात्ति वार्न, टॉनीस आदि प्रमुख समर्थक है।

समन्वयात्मक - समाजशास्त्र को समाज का सामान्य विज्ञान कहने वाले सम्प्रदाय को समन्वयात्मक संप्रदाय कहते हैं कि इसके प्रमुख विचारक दुर्खिम सोरोकिन हॉब्स हाउस प्रमुख हैं।

समाजशास्त्र की विषयवस्तु- प्रस्तुत विवेचना में हम दुर्खिम गिन्सबर्ग केंस्स इकेन्स द्वारा प्रस्तुत विचार की सहायता से विषय वस्तु को स्पष्ट करेंगे।

दुर्खिम के विचार- सामाजिक तथ्यों को समाजशास्त्र की अध्ययन की वास्तविक विषय वस्तु माना उन्होने तीनो तीन प्रमुख भागों सामाजिक स्वरूप शास्त्र सामाजिक शरीर शास्त्र सामान्य समाजशास्त्र गिन्सबर्ग ने चार भागों मे विभाजित किया है।

* समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक सम्बन्ध *

(1) समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र
क्रोबर के अनुसार - इन्होंने समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र को जुड़वा बहने कहा है।

हॉबेक के अनुसार- " विस्तृत समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र एवं समान है।
मानव शास्त्र के तीन प्रकार हैं।

(1) भौतिक मानव शास्त्र → जो आदिम मानव की उत्पत्ति तथा उसकी शारीरिक विशेषताओं का अध्ययन करता है।
(2) एतिहासिक मानवशास्त्र → पूर्व एतिहासिक यौग संस्कृतियों और प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है।
(3) सामाजिक मानवशास्त्र → इसका क्षेत्र सबसे अधिक विशरित है। इसके अंतर्गत जनजाति की सामाजिक संरचना संस्कृति पारवारिक व्यवस्था आर्थिक प्रवृत्तियाँ न्याय कानून और सामाजिक संरचना का अध्ययन करता है।

(2) समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में अंतर-।-
अर्थशास्त्र जीवन की की सामान्य दशाओं से सम्बंधी इन आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन भौतिक से आर्थिक और सामाजिक कल्याण के तथ्य की प्राप्त करता है। सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति सदैव एक दूसरे जुड़ी रहती हैं।
परसन्स और स्मेकसर

"अर्थशास्त्र की सम्मनिय अंग का दावा करदिया जाता है।

अंतर -:-
दोनों विज्ञानों की प्रकृति को देखकर इनके बीच कुछ मौलिक अंतर भी हैं।

(1) समाजशास्त्र सम्पूर्ण समाज का अध्ययन होने के कारण एक सम्मनिय विज्ञान है। जबकि अर्थशास्त्र केवल इस प्रकार यह एक विशेष विज्ञान है।

(2) समाशास्त्र तथा राजनितिक शास्त्र राजनितिक शास्त्र सामाजिक ज्ञान की वह शाखा है। शासन सिद्धांतों की और नितियों की व्याख्या करता है।

(3) समाजशास्त्र और राजनितिशास्त्र को एक दूसरे से सम्बधित माना जाता है। क्योंकि राजा मौलिक रूप से सामाजिक ही हैं।

अन्तर -
समाजशास्त्र पूर्ण रूप सामाजिक प्रकृति से सम्बधित है। जैसे जन संख्या सम्बधित विशेषता

समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान → मनोविज्ञान मनुष्य का मानसिक अध्ययन है। जो व्यक्ति को अनुभव करने और विचार करने विभिन्न इच्छाओं तथा प्रेरणा के समान प्रदान करते हैं।